अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 6, ISSUE 2, (April-June, 2018)

ऋषि-परम्परा के विविध आयाम - एक परिशीलन

डा. जितेन्द्र कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर, (संस्कृत)

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सैक्टर- 1, पंचकूला

dr.jitenderarya@gmail.com

भारतीय संस्कृति को दुनिया की आदि संस्कृति माना जाता है। यहाँ की संस्कृति और सभ्यता सब ऋषि आधारित है। भारतीय ऋषि-मुनियों ने सम्पूर्ण विश्व को ज्ञान के विविध स्रोत प्रदान किए हैं। वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत आदि सद्ग्रन्थ, सब भारतीय ऋषि-मुनियों की दिव्य साधना के ही फल हैं।

भारतीय मनीषियों ने गणित, खगोल-विज्ञान, भौतिक-विज्ञान, रसायन-विज्ञान, आयुर्वेद चिकित्सा-विज्ञान, वास्तुकला, ललितकला, यान्त्रिक, प्रौद्योगिकी जैसे विज्ञान के विविध क्षेत्रों में नित्य नूतन आविष्कार किए हैं। जिससे आधुनिक समाज पूर्णतः प्रभावित है।

इस संस्कृति का मूल आधार 'वेद' है। जिसको आचार्य भास्कर ने 'अपौरुषेयं वाक्यं वेदः'[1] कहकर सम्बोधित किया है। यानि वह ज्ञान जिसको मानव ने न लिखा हो, न बनाया हो, अपितु जो स्वतः ईश्वरीय प्रेरणा से ऋषियों की आत्मा में प्रकट हुआ हो।

ऋग्वेद की निम्नलिखित मन्त्र में इसका स्पष्ट वर्णन प्राप्त होता है-

उसी परब्रहा से (ऋचः) ऋग्वेद (यजुः) यजुर्वेद, (सामानि) सामवेद और अथर्ववेद (छन्दांसि) - ये चारों वेद उत्पन्न हुए हैं। इसीलिए सब मनुष्यों को उचित है कि वेदों का उपदेश ग्रहण करें और वेदोक्त रीति से ही चलें।

तस्माद् यज्ञात्सर्वहुतः ऋच सामानि जज्ञिरे।

छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ।। [2]

इस प्रकार ईश्वरीय अनुकम्पा से वेद ज्ञान ऋग्वेदादि चार भागों में ऋषियों की आत्मा में प्रकट हुए। जिसका वर्णन 'मनुस्मृति' में भी प्राप्त होता है-

अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्मसनातनम्।

दुदोह यज्ञसिद्ध्यर्थम् ऋग्यजुः सामलक्षणम्।। [3]

इस मन्त्र की व्याख्या करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में लिखते हैं-

(तस्माद्यज्ञात्स०) तस्माद् यज्ञात्सच्चिदानन्दादि- लक्षणात्पूर्णात्पुरुषात् सर्वहुता सर्वपूज्यात् सर्वोपास्यात् सर्वशक्तिमतः परब्रह्मणः (ऋचः) ऋग्वेदः, (यजुः) यजुर्वेदः (सामानि) सामवेदः, (छन्दांसि) अथर्ववेदश्च (जज्ञिरे) चत्वारो वेदास्तेनैव प्रकाशिता इति वेद्यम्। सर्वहुत इति वेदानामपि विशेषणं भवितुमर्हति। वेदाः सर्वहुतः यतः सर्वमनुष्यैः होतुमादातुं ग्रहीतुं योग्याः सन्त्यतः।'' [4]

प्रथम बार अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा - इन चार ऋषियों में क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का ज्ञान प्रकाशित हुआ। इन्हीं चारों ऋषियों के द्वारा वेदज्ञान का प्रवाह अनादिकाल से होता चला आ रहा है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 6, ISSUE 2, (April-June, 2018)

महर्षि यास्क ने 'निरुक्त' में कहा है- ''साक्षात्कृतधर्माणो ऋषयो बभूवुः''[5] अर्थात् जिसने वैदिक मन्त्रों का साक्षात्कार किया है, उसे 'ऋषि' कहा जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि वेद अपौरुषेय है। जिसका ऋषि परम्परा ने साक्षात्कार किया और अपने शिष्यों को इसका अध्ययन कराया। इस ज्ञान से पोषित शिष्यों द्वारा इस तत्त्व को भविष्य के लिए सुरक्षित किया।

वेद को भारतीय संस्कृति का मुख्य प्रमाण माना जाता है। मनु ने मनुस्मृति में लिखा है- ''वेदोऽखिलो धर्ममूलम्'' [6] अर्थात् समस्त वेद ही धर्म का मूल है। और भारतीय संस्कृति का आधार है।

इसी बात को पुष्ट करते हुए बौधायन-धर्मसूत्र में लिखा है- ''उपदिष्टो धर्मः प्रतिवेदम्'' [7] अर्थात् धर्म का उपदेश प्रत्येक वेद में किया गया है। ''तस्याऽनु व्याख्यास्यामः'' [8] अर्थात् हम उसी के अनुसार धर्म की व्याख्या करेंगे।

उपर्युक्त साक्ष्यों व प्रमाणों से यह ज्ञात होता कि ऋषि-संस्कृति का मूल आधार वेद है। वैदिक मन्त्रों में मानव के लिए उपयुक्त ज्ञान-विज्ञान का समावेश किया गया है। जिससे मानव ज्ञान के आलोक में अपने जीवन को सुचारु रूप से चला सके। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भारतीय संस्कृति का यथार्थ ज्ञान वेदों और वैदिक वाङ्मय में निहित है। इन वैदिक मन्त्रों के वेत्ता या द्रष्टा कोई और नहीं, अपितु हमारे ऋषिगण ही हैं।

वेद और ऋषि का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। यानी बिना वेद के ऋषि का अस्तित्व अधूरा है और बिना ऋषि के वेदज्ञान। सम्भवतः इसी बात का संकेत करते हुए ऋग्वेद में कहा है- ''इदं नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः'' [9] अर्थात् हमारी संस्कृति को अपने ज्ञानालोक से प्रकाशित करने वाले ऋषियों को नमन है। आज नासा जैसे विज्ञान केन्द्रों पर अनुसंधान का विषय भारतीय ज्ञान भी है। जो भविष्य में विश्व का मार्गदर्शन कर सके।

अतः यह कहा जा सकता है कि वेद ऋषि-संस्कृति का मूल आधार है तथा उपनिषदें उस आदि संस्कृति का सजीव उदाहरण हैं।

गुरु-शिष्य परम्परा के विषय में एक उक्ति प्रायः कही जाती है- ''गुरोस्तु मौनं व्याख्यानं शिष्यास्तु छिन्नसंशयाः।'' अर्थात् गुरु के मौन व्याख्यान से ही शिष्यों के संदेहों का नाश हो जाता है। ऐसी उक्ति केवल ऋषि-मुनियों के लिए प्रयुक्त की जा सकती है। शिष्य की जिज्ञासा और गुरु का समाधान, यही उपनिषदों का वैशिष्ट्य है। हमारी गुरु-शिष्य का मूल आधार त्याग, तपस्या और साधना है। जिसके आधार पर गुरुजन अपने शिष्यों के मनोभावों को भी पढ़ लेते थे। शिष्य भी इस परम्परा में इतने निपुण हो जाते थे कि वे गुरु के मौन संकेत को भी समझ लेते थे। गुरुकुल व्यवस्था में अध्ययनरत शिष्य आचार्य के सान्निध्य में रहते थे। अतः वे आचार्य के संकेतों को सहजता से ग्रहण कर लेते थे।

महर्षि मनु ने वेदों को सम्पूर्ण ज्ञान का आधार कहा है- ''सर्वज्ञानमयो हि सः'' [10] अर्थात् वेद ही सम्पूर्ण ज्ञान अथवा विद्या के मूलाधार हैं। वेदों में दार्शनिक सिद्धान्त, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, अध्यात्म, मनोविज्ञान, आयुर्वेद, गणित, भौतिकी, रसायनशास्त्र, वनस्पति-शास्त्र, जन्तुविज्ञान, प्रौद्योगिकी, वृष्टिविज्ञान, भूगर्भविज्ञान, अर्थशास्त्र, नाट्यशास्त्र, काव्यशास्त्र, कामशास्त्र और विविध कलाओं का वर्णन है। वेदों के अध्यात्मिक और दार्शनिक तत्त्वों को लेकर ही विविध उपनिषदों और दर्शनशास्त्रों की रचना हुई है।

मानवमात्र के कर्तव्य-बोध के लिए वेद सबसे प्रामाणिक ग्रन्थ हैं। इनमें गुरु-शिष्य, पिता-पुत्र, पति-पत्नी, माता-पिता, समाज और व्यक्ति कर्तव्याकर्तव्य का विस्तृत वर्णन और प्रतिपादन है। यहां विश्व-बन्धुत्व, परोपकार, उद्योग, दान-पुण्य, सत्कर्म एवम् अतिथि सत्कार आदि का विस्तृत विवरण भी मिलता हैं।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 6, ISSUE 2, (April-June, 2018)

वेदों में कृषि, व्यापार और वाणिज्य का स्वरूप, विविध धातुएँ, प्रचलित मुद्राएँ, विविध शिल्प, अन्न, वस्त्र आदि का क्रय-विक्रय, आदान-प्रदान की व्यवस्था, ऋणदान आदि से सम्बद्ध सामग्री प्राप्त होती है। व्यापार में सफलता के लिए दो गुणों को आवष्यक बताया गया है - (1) चरित (चरित्र की शुद्धि एवं व्यवहारकुशलता) (2) उत्थित (श्रम और उत्साह)।

यजुर्वेद के एक मन्त्र में बहुत ही सुन्दर ढंग से प्राचीन अर्थव्यवस्था प्रतिपादित किया है-

देहि मे ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधे।

निहार च हरासि मे निहारं नि हराणि ते स्वाहा।।[11]

ऋषि परम्परा में प्रत्येक वस्तु को ज्ञान की कसौटी पर तौला जाता है। वेदों को प्रकाशित करने या उनके रक्षण का श्रेय ऋषि-परम्परा को ही जाता है।

सम्पूर्ण विश्व आज जिस विषय का अनुसंधान कर रहा है, उसको हमारे मनीषियों ने सृष्टि के आदि काल में ही कर लिया था। जिन वैज्ञानिक पद्धतियों की पूर्वकाल में खोज की जा चुकी थी, आधुनिक वैज्ञानिक उन्हीं सत्यों व तथ्यों की पुनः खोज कर रहे हैं। उदाहरण के लिए ऋषि कणाद परमाणु सिद्धान्त और अस्त्र के जनक जॉन डाल्टन को माना जाता है, लेकिन उनसे भी 2500 वर्ष पूर्व कणाद ने वेदों में लिखे सूत्रों के आधार पर परमाणु सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था। भारतीय इतिहास में महर्षि कणाद को परमाणुशास्त्र का जनक माना जाता है। जिसका आज पूरा विश्व अनुकरण कर रहा है।

ऋषि भारद्वाज- (600 ईसा पूर्व)

राइट बन्धुओं से 2500 वर्ष पूर्व ऋषि भारद्वाज ने वायुयान की खोज कर ली थी। रामायण काल में वर्णित पुष्पक विमान का उल्लेख इस बात का प्रमाण है कि वायुयान बनाने के सिद्धान्त पहले से ही विद्यमान थे। ऋषि भारद्वाज ने में विमान पर एक विस्तृत शास्त्र लिखा। इस विमानशास्त्र में यात्री विमानों के अलावा, लड़ाकू विमान और स्पेस शटल यान का भी उल्लेख मिलता है। उन्होंने एक ग्रह से दूसरे ग्रह पर जाने वाले विमानों के सम्बन्ध में भी लिखा है। इतना ही नहीं, इस शास्त्र में उन्होंने वायुयान को अदृश्य कर देने की तकनीक का उल्लेख भी किया गया है।

बौधायन ऋषि - (८०० ईसा पूर्व)

बौधायन शुल्बसूत्र तथा श्रौतसूत्र के रचयिता हैं। वे भारत के प्रथम गणितज्ञ हैं। पाइथागोरस के सिद्धान्त से बहुत पहले बौधायन ने ज्यामिति के सूत्र रचे थे। यह दूसरी बात है कि आज विश्व में यूनानी ज्यामितिशास्त्री पाइथागोरस और यूक्लिड के सिद्धान्त ही पढ़ाए जाते हैं।

वस्तुतः, २८०० वर्ष पूर्व प्राचीन भारत में रेखागणित, ज्यामिति या त्रिकोणमिति को शुल्व-शास्त्र कहा जाता था। शुल्व शास्त्र के आधार पर विविध आकार-प्रकार की हवेलियाँ बनाई जाती थीं। इसी प्रकार यज्ञवेदी के परिमाण में भी इसी शास्त्र का प्रयोग होता था। दो समकोण समभुज चौकोन के क्षेत्रफलों का योग करने पर जो संख्या आएगी उतने क्षेत्रफल का 'समकोण' समभुज चौकोन बनाना और उस आकृति का उसके क्षेत्रफल के समान को वृत्त में परिवर्तित करना, इस प्रकार के सूत्र द्वारा ही सरलता से किया जा सका है।

भास्कराचार्य (1114 -1179 ई०)-

भास्कराचार्य भारत के सुप्रसिद्ध गणितज्ञ एवं खगोल- शास्त्री थे। इनके द्वारा लिखित ग्रन्थों का अनेक विदेशी विद्वानों ने अपने शोध में सहारा लिया है। न्यूटन से 500 वर्ष पूर्व भास्कराचार्य ने गुरुत्वाकर्षण के नियम को जान लिया था। उन्होंने इसका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 6, ISSUE 2, (April-June, 2018)

उल्लेख अपने ग्रन्थ 'सिद्धान्तशिरोमणि' में भी किया है। गुरुत्वाकर्षण के नियम के सम्बन्ध में उन्होंने लिखा है, 'पृथ्वी अपने आकाश का पदार्थ स्वशक्ति से अपनी ओर खींच लेती है। इस कारण आकाश का पदार्थ पृथ्वी पर गिरता है। इससे सिद्ध होता है कि पृथ्वी में गुरुत्वाकर्षण शक्ति है।

भास्कराचार्य ने 'लीलावती' नामक अपने ग्रंथ में गणित और खगोल विज्ञान सम्बन्धी विषयों पर प्रकाश डाला है। इसमें गुरुत्वाकर्षण, चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहण की सटीक जानकारी है। सन् 1963 ई. में उन्होंने 'करण कुतूहल' नामक ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ में बताया गया है कि जब चन्द्रमा सूर्य को ढक लेता है तो सूर्यग्रहण तथा जब पृथ्वी की छाया चन्द्रमा को ढक लेती है तो चन्द्रग्रहण होता है। ज्योतिष शास्त्र के मूल तत्त्व पर शोध कर भास्कराचार्य ने सिद्ध कर दिया कि हमारी संस्कृति अति प्राचीन एवं ज्ञानात्मक है।

महर्षि पतञ्जलि (ईसा पूर्व द्वितीय शताब्दी)

पतंजलि द्वारा लिखे हुए तीन प्रमुख ग्रन्थ मिलते हैं- योगसूत्र, महाभाष्य और वैद्यक शास्त्र। पतञ्जलि को महान मनोवैज्ञानिक और चिकित्सक कहा जाता है। पतंजलि ने योगशास्त्र को पहली बार अनुशासित किया तथा उसे चिकित्सा और मनोविज्ञान से जोड़ा।

कायवाग्बुद्धिविषया ये मलाः समवस्थिताः।

चिकित्सालक्षणाध्यात्मशास्त्रैस्तेषां विशुद्धयः।। [12]

अर्थात् मन, वाणी तथा शरीर के मलों को दूर करने का मार्ग एक ही व्यक्ति ने बतलाया, जिसका नाम पतंजलि है।

उक्त श्लोक में सांकेतिक भाषा में कहा गया है कि- जो वाणी, मन तथा शरीर की शुद्धि का मार्ग तथा चिकित्सा, व्याकरण तथा अध्यात्म दोनों का रहस्य बताने वाला है, वह पतंजलि ही हैं।

कुछ विद्वानों का मत है कि योगसूत्र के रचयिता, व्याकरण-महाभाष्य के कर्ता तथा आयुर्वेद-ग्रन्थ के रचयिता पतंजलि ही थे। वे एक ही पतंजलि थे, जिन्होंने इन तीनों ग्रन्थों का सृजन किया।

महाराज भर्तृहरि द्वारा रचित वाक्यपदीय के अनुसार भी पतंजलि को उक्त तीनों ग्रन्थों के रचयिता के रूप में स्वीकार किया गया है-

योगेन चित्तस्य पदेन वाचां, मलं शरीरस्य च वैद्यकेन।

योऽपाकरोत् तं प्रवरं मुनीनां, पतंजलि प्रांजलिरानतोऽस्मि।। [13]

अर्थात् योग की रहस्यात्मक व साधनात्मक रचना के द्वारा जो चित्त के, पाणिनि व्याकरण पर रचित महाभाश्य के द्वारा वाणी के तथा वैद्यक शास्त्र के द्वारा शरीर के मल को जो दूर करने का उपाय बतलाते हैं (योग-सूत्र, महाभाष्य तथा वैद्यक शास्त्र) ऐसे पतंजलि ऋषि को मैं अपने दोनों हाथों को जोड़कर प्रणाम करता हूँ। यहां तन व मन की शुद्धि का ज्ञान ऋषि परम्परा से ही प्राप्त हुआ है।

ऋषि चरक (300-200 ईसा पूर्व)

महर्षि चरक ने विश्व को पेड़-पौधों और वनस्पतियों पर आधारित एक चिकित्सा शास्त्र दिया। अतः चरक की गणना भारतीय औषधि-विज्ञान के मूल प्रवर्तकों में होती है। जो आज तक शोध का विषय बना हुआ है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 6, ISSUE 2, (April-June, 2018)

ऋषि चरक ने आयुर्वेद का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ 'चरक संहिता' लिखा है। इस ग्रंथ में शरीरशास्त्र, रक्ताभिसरणशास्त्र, ओषधिशास्त्र इत्यादि विषयों में गम्भीर चिन्तन हुआ है। यहां मधुमेह, क्षयरोग, हृदयविकार आदि रोगों के निदान एवम् औषधोपचार विषयक व्यापक ज्ञान मिलता है। उन्होंने दुनिया के सभी रोगों के निदान और उससे बचाव का उपाय बताया है, साथ ही उन्होंने इस तरह की जीवनशैली का वर्णन किया, जिसमें कि कोई रोग और शोक न हो।

योग-वार्तिक की इस उक्ति से यह ज्ञात होता है कि योग दर्शन, व्याकरण-महाभाष्य तथा आयुर्वेद ग्रन्थ के रचयिता एक ही व्यक्ति थे।

महर्षि सुश्रुत-

अथर्ववेद में आयुर्वेद के कई सूत्र मिलते हैं। इसी के आधार पर चरक, सुश्रुत, च्वयन आदि ऋषियों ने अपने ग्रंथ की रचना की। महर्षि सुश्रुत द्वारा लिखित 'सुश्रुत संहिता' ग्रन्थ में शल्य-चिकित्सा से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण जानकारी मिलती है। इस ग्रन्थ में चाकू, सुइयाँ, चिमटे इत्यादि सहित 125 से भी अधिक शल्य चिकित्सा हेतु आवश्यक उपकरणों के नाम मिलते हैं। यहां लगभग 300 प्रकार की सर्जरियों का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार सुश्रुत सर्जरी के आविष्कारक माने जाते हैं। 2600 साल पहले उन्होंने अपने समय के स्वास्थ्य वैज्ञानिकों के साथ प्रसव, मोतियाबिन्द, कृत्रिम अङ्ग लगाना, पथरी का इलाज और प्लास्टिक सर्जरी जैसी कई तरह को जटिल शल्य चिकित्सा के सिद्धान्त प्रतिपादित किए।

आचार्य नागार्जुन (सन् 931ई०, द्वितीय शताब्दी)

नागार्जुन ने रसायन शास्त्र और धातु-विज्ञान पर बहुत शोध कार्य किया। 'रस-रत्नाकर' और 'रसेन्द्र मङ्गल' रसायन शास्त्र पर आधारित ग्रंथ हैं।

इन्होंने अपनी चिकित्सकीय सूझ-बूझ से अनेक असाध्य रोगों की औषधियाँ तैयार की। इनके द्वारा सोना धातु एवं पारे पर किए गए प्रयोग और शोध चर्चा में रहे हैं। नागार्जुन अपने ग्रंथ में पारे से सोना बनाने का फॉर्मूला लिखा है। उनके अनुसार पारे के कुल 18 संस्कार होते हैं। पश्चिमी देशों में नागार्जुन के पश्चात् जो भी प्रयोग हुए, उनका आधार नागार्जुन के सिद्धान्त के अनुसार ही है।

महर्षि पाणिनि

पाणिनि ने दुनिया का अद्भुत व्याकरण लिखा है। उन्होंने भाषा के शुद्ध प्रयोगों का निर्धारण करके संस्कृत भाषा को व्याकरणबद्ध किया। लगभग 3 हजार वर्ष ईसा पूर्व 'अष्टाध्यायी' की रचना की गई, जिसमें 8 अध्याय और प्रत्येक अध्याय में 4 पाद हैं। व्याकरण के इस ग्रन्थ में पाणिनि ने लगभग 4 हजार सूत्र रखे हैं। यह बहुत ही वैज्ञानिक और तर्कसिद्ध है।

अष्टाध्यायी मात्र व्याकरण-ग्रन्थ नहीं है। इसमें तत्कालीन भारतीय समाज का पूरा चित्रण मिलता है। उस समय के भूगोल, सामाजिक, आर्थिक, शिक्षा और राजनीतिक जीवन दार्शनिक चिन्तन, खान-पान, रहन-सहन आदि के प्रसङ्ग यथास्थान अङ्कित हैं।

महर्षि अगस्त्य

महर्षि अगस्त्य एक वैदिक ऋषि थे। इनकी गणना सप्तर्षियों में की जाती है। ऋषि अगस्त्य ने 'अगस्त्य संहिता' नामक ग्रन्थ की रचना की। आश्चर्यजनक रूप से इस ग्रन्थ में विद्युत् उत्पादन से सम्बन्धित सूत्र मिलते हैं-

संस्थाप्य मृण्मये पात्रे ताम्रपत्रं सुसंस्कृतम्।

छादयेच्छिखिग्रीवेन चार्द्राभिः काष्ठापांसुभिः

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 6, ISSUE 2, (April-June, 2018)

दस्तालोष्टो निधात्वयः पारदाच्छादितस्ततः।

संयोगाज्जायते तेजो मित्रावरुणसंज्ञितम्।'

अर्थात् एक मिट्टी का पात्र लें, उसमें ताम्र पट्टिका (Copper Sheet) डालें तथा शिखिग्रीवा (Copper sulphate) डालें, फिर बीच में गीली काष्ठ पांसु (wet saw dust) लगायें, ऊपर पारा (mercury) तथा दस्तलोष्ट (Zinc) डालें, फिर तारों को मिलाएंगे तो उससे मित्रावरुणशक्ति (Electricity) का उदय होगा। निश्चत ही बिजली का आविष्कार थॉमस एडिसन ने किया लेकिन एडिसन अपनी एक किताब में लिखते हैं कि एक रात में संस्कृत का एक वाक्य पढ़ते-पढ़ते सो गया। उस रात मुझे स्वप्न में संस्कृत के उस वचन का अर्थ और रहस्य समझ में आया जिससे मुझे सहयोग मिला।

निष्कर्ष

इस प्रकार भारत के प्राचीन मनीषियों ने मानव को जीवन यापन करने के ज्ञान के अनेकानेक पहलुओं पर अपना चिन्तन प्रकट किया। न केवल उक्त ऋषि, अपितु अनेकानेक ऋषियों ने अपना-अपना योगदान दिया है। वेद का दिव्य ज्ञान, ज्योतिष अथवा खगोल- विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, संगीत- शास्त्र अथवा रस- विज्ञान, वायुयान निर्माण, विविध युद्ध- आयुधों का निर्माण, यज्ञ-विज्ञान, प्राकृतिक- चिकित्सा, तथा अर्थशास्त्र आदि, भारतीय ऋषि परम्परा के ही परिचायक हैं। गृहस्थ आश्रम से सम्बन्धित कोई भी ऐसा तत्त्व नहीं है जो ऋषि-परम्परा में प्राप्त न हो।

संदर्भ सूची -

1. अर्थसंग्रह पृ० 36

2. ऋग्वेद – 10.90.9 स्वामी दयानन्द सरस्वती, विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली-संस्करण- 2021 पृष्ठ 925

3. मनुस्मृति- 1.23, चौखम्बा संस्कृत भवन वाराणसी, तृतीय संस्करण- वि.सं. 2076, पृष्ठ- 12

4. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका- वेदोत्पत्तिविषयः, स्वामी दयानन्द सरस्वती, विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली- संस्करण 2022, पृष्ठ- 16

5. निरुक्तम् – 2.20, विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली- तृतीय संस्करण- 2016, पृष्ठ- 64

6. मनुस्मृति- 2.6, पृष्ठ-36

7. बौधायन-धर्मसूत्र, प्रथमः प्रश्नः सूत्र- १६ चौखम्भा प्रकाशन संस्करण- वि.सं 2074 पृष्ठ- 1

8. बौधायन-धर्मसूत्र 2

9. ऋग्वेद 10.14.15, पृष्ठ 520

10. मनुस्मृति- 2.7 पृष्ठ 38

11. यजुर्वेद 3.50, चौखम्बा संस्कृत भवन, वाराणसी, प्रथम संस्करण- वि.सं. 2069, पृष्ठ- 16

12. पातञ्जल योगदर्शनम् टीका की भूमिका- स्वामी अनन्त भारती (डॉ० ब्रह्ममित्र अवस्थी) चौखम्भा ओरियन्टालिया बंग्लो रोड-9 दिल्ली- संस्करण-2018, पृष्ठ-15

13. वाक्यपदीयम् - ब्रह्मकाण्डम्- 137, चौखम्बा विद्याभवन चौक, वाराणसी, संस्करण 2006 ई०, पृष्ठ- 44